हमारी बात

इंसान की मूलभूत भावनाएं, अनुभूतियां और बहुत से जीवन-मूल्य शाश्वत, यानी हमेशा कायम रहते हैं। इनकी इन्द्रधनुषी धाराएं ज़िन्दगी को रंग-रूप देती रहती हैं। प्यार, घृणा, दर्द, द्वेष, करुणा, ममता, जोश, श्रद्धा और आनन्द जैसे अहसास चिरकाल से हमारे दिलों में घर किए हुए हैं। इनके साथ ही चलते हैं इनके अलग-अलग स्वरूप, आपसी रिश्ते, टकराहटें और सामंजस्य बनाने के प्रयास। इस तरह की महसूसियत हर दिल में धड़कती है, चाहे हम किसी देश-प्रदेश के वासी हों, किसी मज़हब या दर्शन के अनुयायी हों, मर्द हों या औरत हों, अमीर हों या गरीब हों।

सच्चाई, ईमान, इन्साफ़, वफ़ादारी और बुद्धि जैसे मूल्य भी सदियों से विविध सभ्यता-संस्कृतियों का हिस्सा रहे हैं। कितने ही समाजों ने अपने-अपने तरीके से इन्हें परिभाषित किया और मान्यता दी है। बहुत से इंसानी अनुभव, जो इन भावनाओं व मान्यताओं के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं, हर युग की धारा में बहते हैं। हर युग इन्हें जीता है; ये चिरन्तन हैं। वाह्य जगत के परिवर्तन भले ही आते रहें, पर मानव-अस्तित्व की ये पंखुड़ियां हमेशा फूटती रहती हैं।

काल के अनन्त छोरों से विश्व के अनेक युगदृष्टा (यानी जीव और जगत पर गहन दूर-दृष्टि रखने वाले) रचनाकार स्त्री-पुरुषों ने, भावनाओं और उनके मेल या द्वन्द्व को, अपनी संस्कृति-भाषा, अपने युग-समाज के सन्दर्भ के साथ, शब्द दिए हैं, उन्हें अभिव्यक्त किया है। कविता, कहानी, नाटक और उपन्यास जैसी विधाएं जीवन के मूल श्रोतों में जन्म लेती हैं। इंसानी जीवन में हमेशा चलने वाली प्रवृत्तियों को साहित्य वाणी प्रदान करता है।

'हम सबला' के इस अंक में कुछ जाने-माने साहित्यकारों की कुछेक रचनाओं से हम रूबरू होना चाहते हैं। इनमें से कुछ के साथ शायद हमारा-आपका परिचय हो। लेकिन इस तरह की मार्मिक रचनाएं दोहराने से बासी नहीं होतीं, बल्कि बार-बार पढ़ने से हम रसास्वादन की नई गहराइयों तक पहुंचते हैं।

ये कहना भी सही नहीं होगा कि साहित्य कठिन या क्लिष्ट होता है। चाहे वो सूर, मीरा या कबीर हों, चाहे प्रेमचन्द, दुष्यन्त या सर्वेश्वर हों- इनकी बातें किसके दिल को नहीं छूतीं? अच्छा साहित्य, ज़रूरी नहीं कि कठिन ही हो। और अगर कुछ बातें पूरी तौर से समझ में नहीं भी आतीं तो कोई आफ़त नहीं है। बात दिलचस्प होती है तो हम समझने की कोशिश भी करते हैं और कहीं से थोड़ी इल्म भी ले आते हैं। तथाकथित कम 'पढ़े-लिखे' लोग ज़िन्दगी की सच्चाइयां देखकर खुद-ब-खुद समझ की सीढ़ियां चढ़ लेते हैं या किसी से मदद भी ले लेते हैं।

बहरहाल, ये रचनाएं उन विषयों और गुत्थियों पर पैनी नज़र डाल रही हैं जिनमें हम-आप अक्सर उलझे रहते हैं। ये रचनाएं उन मुस्कुराहटों, उन आंसुओं से सराबोर हैं, जो हमारी, आपकी, सबकी हैं। ये हमें सोचने और महसूस करने के मौके देती हैं। बहुत से सुगबुगाते सवाल नए रूप में सामने आ जाते हैं और दिल-ओ-दिमाग रंग-बिरंगे जवाबों की खोज में लग जाते हैं। सतही-सपाट जवाब पा लेना आसान हो सकता है पर सच्चाई के ताने-बाने में उलझते हुए, कुछ-कुछ नया और रंग-बिरंगा बुन पाना, एक खास नज़र, एक खास कशिश और एक खास अंदाज़-ए-बयां खोजते हैं। श्रेष्ठ चिन्तक-लेखक इस तरह का बहुत कुछ कर गुज़रे हैं। विश्व-साहित्य ऐसी रचनाओं से भरा हुआ है जो ज़िंदगी का आईना हैं। सारे ऊहापोह और कश्मकश यहां जीवन्त हो जाते हैं।

यहां झलकियां हैं औरत के विविध रूपों की। उसकी ज़िन्दगी के उतार-चढ़ावों की और उन पर पैर जमाने की कोशिशों कीं। उसके दिल की तहों में पैठी खुशी और गम की परतें इनमें उभर आई हैं। कितनी ज़िंदगियां हमारे इर्द-गिर्द बिखरी पड़ी हैं जिनकी झलक हम यहां देख रहे हैं। मन्नू भण्डारी की 'अकेली'- सोमा बुआ को देखिए जिनके पति होकर भी नहीं है और जो समधियाने जाने की सारी तैयारी हुलस कर करती हैं, पर बुलावा नहीं आता। वाजिदा तबस्सुम की 'उतरन' चमकी जनम से उतारे कपड़े पहन-पहन कर जवान हुई पर शहज़ादी पाशा को ज़िंदगी भर अपनी जूठन पर जीने के लिए मजबूर किया। विजयदान देथा की 'सावचेती'- सियारन यानी स्त्री अपने सियार को धता बता कर चैन से चांद-सूरज के साथ अठखेलियां करती है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'स्त्री के पत्र' की मंझली बहू, मृणाल और बिन्दु - समाज की दृष्टि में एक सुन्दर और एक कुरूप एक अनूठे रिश्ते में एक दूसरे में अपनी ताकतें पाती हैं, अपने रास्ते तलाशती हैं। 'घरवाली' की लाजो में क्या हमें नहीं दिखाई पड़ता उस दबंग औरत का अक्स जो समाज को धता बताकर अपनी मर्ज़ी के अनुसार जीने का हौसला रखती है? 'जानकी'- आज की जानकी, रामायण की जानकी, युग-युगों की जानकी, वैदेही, सीता- क्या कुछ भी बदला नहीं है? क्या नज़रें बदली हैं? क्या जानकी के आत्मबल को, सीता की स्वयंभू शक्ति को भी देखने की ज़रूरत है? ये सारी रचनाएं औरत की चेतना और औरत की मजबूरियों के साथ-साथ उनसे मुक्ति का रास्ता भी दिखाती हैं। मृणाल के शब्दों में "तुम्हारी शरण से विमुक्त" - विमुक्त यानी 'सुरक्षा' और 'मर्यादा' के दारे से निकलकर अपने तरीके से जीने की आज़ादी, अपनी शर्तों पर जीने की आज़ादी।

उम्मीद है कि कहानियों का ये काफ़िला हमें-आपको इस तरह की अन्य रचनाओं को पढ़ने और उन पर चिन्तन-मनन करने की और खुद से भी कुछ रचने-लिखने की प्रेरणा देगा।

जया श्रीवास्तव